श्री साईं गीता महातम्य

SAI PUBLICATIONS
www.shrianandsai.org

श्री साईं गीता
महातम्य

प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं

प्रकाशक
साईं पब्लिकेशन्स
श्री आनंद साईं मार्ग, आनंदा अपार्टमेंट, क्लार्क टाऊन,
नागपुर - 440 004
web : www shrianandsai.org

श्री साईं गीता के मंत्र

ॐ श्री साईं गीतायै नमः।।
ॐ भवतारनीयै नमः।।
ॐ सत् स्वरूपणियै नमः।।
ॐ त्रिलोकपावनियै नमः।।
ॐ परम् ज्योति मयीमायै नमः।।
ॐ भक्ति दायनियै नमः।।
ॐ समस्त पापविनाशनियै नमः।।
ॐ सर्व मंगल कारनियै नमः।।
ॐ गुप्त तत्व दर्शकायै नमः।।
ॐ जन्म मरण रोग औषधियै नमः।।

" ॐ श्री साईं "

SAI PUBLICATIONS
www.shrianandsai.org

प्रस्तुति

श्री बाबा साईंनाथ की जगत को सबसे पावन पवित्र देन है श्री साईं गीता। उन्होंने यह महान ग्रंथ प्राणप्यारे गुरुदेव श्री आनंद साईं जी द्वारा जगत को प्रदान किया। श्री साईं गीता के अलावा अमृत सागर नामक ग्रंथ द्वारा भगवती माँ की स्तुतियों और महिमाओं का अमृत पिलाता है। साईं माँ, जै गुरु शक्ति इत्यादि ऐसे १०० ग्रंथों और पुस्तकों के रचयिता श्री आनंद साईं जी को हमारा कोटि कोटि प्रणाम है।

अपनी इस पावन रचना "श्री साईं गीता" की महानता, महत्त्व व शक्ति का वर्णन बाबा साईंनाथ ने गुरुदेव के द्वारा समय-समय पर अपने ही शब्दों में किया। श्री साईं गीता क्या है? श्री साईं गीता का महात्म्य क्या है। श्री साईं गीता हमें क्या सिखाती है? श्री साईं गीता से हम क्या पा सकते हैं? ऐसे अनेकों प्रश्नों का उत्तर उन्होंने खुद बखान किया। उनके द्वारा बताई गई इन बातों को हमने इस पुस्तिका में संजोने का प्रयत्न किया है। इस पुस्तिका के पठन के बाद हमें पूरण ज्ञान हो जाएगा कि श्री साईं गीता का क्या महात्म्य है। बाबा ने अपने ये अमृत वचन प्राणप्यारे

गुरुदेव श्री आनंद साईं जी के अंदर बैठ कर बोले। जब कभी प्राणप्यारे गुरुदेव प्रवचन शुरु करते तो ईश्वर के रूप से सीधी वाणी आना शुरु हो जाती थी। ये हमारी आंखो देखी कानो से सुनी हुई है। इसीलिए पढ़ते समय इस बात का ध्यान रखें ताकि आपको बात ठीक से समझ आ जाए।

आईए इस युग ग्रंथ श्री साईं गीता की महिमा। जानें समझें और मनन करें।

बाबा ने बड़े ही सुंदर शब्दों में श्री साईं गीता के बारे में कहा है –

जिस जा जीव पढ़ें ये बाणी।
देवी देव आएं निष्कामी।।
फूट पड़ें अमृत के झरने।
माँ का बास रहे तिस घर में।।

– संपादक

जै गणपति जै आदि गणेश।
नाम लेत सब जाए क्लेश।।
" ॐ श्री साईं "

श्री साईं गीता क्या है?

साईं गीता क्या है? एक अनंत जीवन की अमर गाथा **The Song of one Immortal life.** साईं गीता पढ़ने का उद्देश्य क्या है? एकता में रहना। जो कुछ है एक है, एक अनंत जीवन है। जितना हम अपने को दीन बनाते है उतना ही हम एकता और पूर्णता में मिलते जाते हैं यही साईं गीता का सार है। बाकी सब साधनाएँ छोड़कर एकता में रहने का पूरा जतन करना चाहिए। ये ही साईं गीता हमें सिखाती है। साईं गीता का प्रचार एकता का प्रचार है। जब तक भेद भाव मन में हैं जाति-पाति, धर्म, मजहब का तब तक हमने साईं गीता से कुछ नहीं सीखा। साईं गीता पढ़ने वाले के लिए भेद होना ही नहीं चाहिए। साईं गीता ज्ञान का भण्डार है। माता सरस्वती सोयम् इसमें विराजमान है। संसार के सब दुःखों, तकलीफों का इलाज है। जो इसमें रहता है वो दुःखों से परे चले जाता है। साईं गीता पढ़ो ही नहीं साईं गीता में रहो।

साईं गीता कोटि सूर्यों के समान जगत् को प्रकाश देने वाली है। दुःख-दर्द दूर करने वाली है। जो साईं गीता की शरण में आ जाता है वो मेरी शरण में आ जाता है। साईं गीता पढ़ कर जो भी छल-कपट करता है वो कहीं का नहीं रहता। साईं गीता झूठ, छल, कपट से छुड़ाती है।

साईं गीता साधारण ग्रंथ नहीं है। साईं गीता ईश्वरीय ग्रंथ है। साईं गीता युग ग्रंथ है। साईं गीता इस युग का प्रसिद्ध ग्रंथ है। अमृत सागर इस युग का प्रसिद्ध ग्रंथ है। ये दोनों ग्रंथ जगदीश्वर भगवान भोलेनाथ के दो आँसू हैं।

श्री भगवान माता पार्वती को कहते हैं – प्रिये! ये जो खेल हो रहा है वो युग-युग में जीवों को शांति आनंद देगा। इसमें मैंने अपनी पूरी दया करुणा भर दी है। ये ग्रंथ कोई मामूली ग्रंथ नहीं है। साईं गीता पाँचवा बेद हैं। ऐसे श्री भगवान माता पार्वती से बोल रहे हैं। जो भी इसकी शरण में आएगा उसकी सब मनोकामना पूरी होएगी। दयालु माँ सबके भंडारे भरेगी। जहाँ पर भी कोई दीन होकर पुकार करेगा उसकी पुकार सुनी जाएगी। एक जगह श्री भगवान ने साईं गीता रख दिया है और माता पार्वती से इशारा करते हैं उधर देख वहाँ से एक आवाज़ आ रही है। शिवोहम्, शिवोहम्, शिवोहम्। माता पार्वती बड़ी हैरानगी से देख रही हैं। जगत् झूठ है, मिथ्या है, केवल शिव ही सत् हैं शिवोहम् की स्थिति अध्यातम् में अंतिम स्थिति है। जो साईं गीता का पारायण करेगा वो अन्त में इस स्थिति तक आ ही जायेगा।

साईं गीता मुझ पारब्रह्म से जगत् को मिली है, साईं गीता समस्त पापों को हरने वाली है। साईं गीता समस्त सुखों को देने वाली है। साईं गीता माँ है जो सदा अपने बच्चों की रक्षा करती है। जो सच्चे मन से साईं गीता की छत्र-छाया

में आ जाता है। उसका उद्धार हो जाता है। साईं गीता एकता और पूर्णता में स्थापित करती है। समस्त दोषों से बचाती है। सभी प्रकार के गड्ढों से बचाती है। जो साईं गीता में पूर्ण विश्वास रखकर हर रोज़ साईं गीता का पारयण करता है और अपना जीवन उसमें ढालता है काल उसको हाथ भी नही लगा सकता। इस बात को अच्छी तरह से समझने का है। पूर्णता में विलीन होने के लिए अपने आपको त्यागना पड़ता है। तभी हम पूर्णता में विलीन हो सकते हैं। अपने हित को छोड़ कर परहित में रहना पड़ता है। परहित के लिए जीना पड़ता है। सदा सर्वदा साईं गीता में ही रहना चाहिए साईं गीता से कोटि-कोटांग जीवों का उद्धार होगा। जीव इस भवसागर से तरते जाएंगे। युग-युग में इसकी महिमा बढ़ेगी। साईं गीता अमृत गीता है। साईं गीता का एक-एक शब्द अमृत सिन्धु से आया हुआ है। अमृत से भरा हुआ है। साईं गीता में गुम हो जाओ। साईं गीता अमृत सागर में डुबकियाँ लगाते चले जाओ अमर हो जाओगे। झूठ, छल, कपट, फरेब को छोड़ना पड़ता है। चोरी, निंदा, बुराई, इन सब विकारों को छोड़ना पड़ता है। ये ही साईं गीता सिखाती है। अपने पन को त्यागना पड़ता है। यहाँ पर हर रोज़ जो मैं सुबह बताता हूँ वो मैंने साईं गीता में दे दिया है जो रह गया हैं वो मैं अभी दिये जा रहा हूँ। साईं गीता का पारायण करके कोई भी अज्ञान में, अंधकार में नहीं रह सकता। इस बात को अच्छी

तरह से समझने का है। कितनी भी मुश्किलें अड़चने आती जाएं। साईं गीता का आसरा नहीं छोड़ना। साईं गीता हर मुश्किल, हर मुसिबत में तुम्हारा साथ देगी। साईं गीता का एक-एक श्लोक मन को निर्मल करने वाला है। साईं गीता पापों को हरने वाली है। साईं गीता का प्रतिदिन पारायण करने वाला जीव पापी और पतित रह ही नहीं सकता। साईं गीता की महिमा अटल है। साईं गीता जिस घर में चली जाती है वहाँ पर अमंगल रह ही नहीं सकता। जहाँ साईं गीता का रोज़ पारायण होता है वहाँ पर अमंगल रह ही नहीं सकता, घर में से कौओं के झुण्ड के झुण्ड उड़-उड़ कर जाते जा रहे हैं। कौआ कर्म फल की निशानी है पाप की निशानी है। जो सच्चा साईं गीता का भक्त है। उसके सामने आये हुए भैंसे भी कटते चले जा रहे हैं। हाथ और माथे की रेखाएँ बदलती जा रही हैं। साईं गीता मेरा रूप है। मुझमें और साईं गीता में कुछ भी फर्क नहीं है। साईं गीता एक दिन जगत् में कोटि सूर्यों के समान चमकेगी। धीरे-धीरे इसका प्रकाश बढ़ते जा रहा है। कोई घर ऐसा नहीं बचेगा जहाँ साईं गीता का पारायण ना हो। जो साईं गीता के अंदर अध्यातम् की सबसे ऊंची सच्चाईयाँ नहीं देखता वो गंगा के सामने रह कर भी प्यासे हैं। साईं गीता शांति और मुक्ति की दाता है। जिसने केवल साईं गीता का आधार लिया उसको निराश होने की कहीं जगह ही नहीं है। गुरु अपनी वाणी में हैं। साईं गीता

मेरी वाणी है। साईं गीता मेरा रूप है। साईं गीता के एक-एक शब्द में मैं सोयम् आप समाया हुआ हूँ। त्रिकालदर्शी ईश्वर ने कलयुग शुरु होते समय देख लिया था कलयुग के आखिर में कितनी तकलीफें हैं। ये उस समय लिखाई गई थी। समय निश्चित कर दिया गया था कि इस समय इसका प्रकाश जगत् में होएगा। दिखा रहे हैं इसके साथ ही इसका प्रचार जगत् में रोकने के लिए उल्टी शक्तियाँ, दैत्य लोग खड़े हैं और जोर-जोर से चिल्ला रहे हैं। – इसका प्रचार मत होने दो, ईश्वर के संकल्प को नहीं रोक सकते। यहाँ आकर जो ईश्वर के भक्त नहीं बने तो हमारे जैसा अभागा दुनियाँ में और कोई नहीं है। जितनी साईं गीता बाहर जाती जा रही हैं और जितने बाहर के लोग साईं गीता से आनंद ले रहे है, अनुभव कर रहे हैं, उनको रक्षा का हाथ मिल रहा है। रक्षा मिल रही है। अमृत पीना है तो साईं गीता में अपना जीवन ढालो। एक-एक लाईन पढ़ो और देखो हम इसके बाहर तो नहीं जा रहे। सर्वत्र के भले के लिए जीओ। ये ही साईं गीता सिखाती है सभी जीव साईं गीता के बच्चे हैं। साईं गीता सबकी माँ है। सबकी सेवा करना, सबसे सच्चा प्यार करना ये ही साईं गीता का संदेश है। जो साईं गीता का नित्य पारायण नहीं करते हैं उनको मैं हाथ जोड़ कर कहता हूँ। जरा पारायण करके देखो तो सही। मनुष्य बुद्धि कहती है। साईं गीता अभी बनी है, ये साईं गीता कलयुग की बनी

हुई है। उस समय की बनी है। ये ईश्वर की करनी है। ईश्वर की करनी को जानने की कोशिश करना है, समझना है, साईं गीता में पूर्ण विश्वास होना ईश्वर दया की सबसे बड़ी निशानी है। शरीर छोड़ते हुए मेरी एक बात सदा याद रखना साईं गीता सुनते हुए मेरा नाम लेते हुए शरीर छोड़ना। यदि साईं गीता सुनते हुये और मेरा नाम लेते हुए शरीर छोड़ोगे तो तुम्हारा उद्धार हो जायेगा। जो-जो कुछ मैंने साईं गीता के लिए बोला है वो-वो अमृत सागर के लिए भी लागू होता है। बात अन्त में उसी की बनेगी जो साईं गीता में सच्चे मन से चलेगा।

★　★　★

श्री साईं गीता के दोहे

साईंनाथ की कृपा भयी सब जग में प्रकाश हुआ।
साईं गीता जग को दीनी दुर्बुद्धियों का नाश हुआ।।
चिट्ठी भेजी बालक ने साईं माँ के नाम।
साईं गीता आने से माँ भक्ति बढ़ी निष्काम।।
असंख्य जीव हैं तर रहे पढ़-पढ़ अमृत वाणी।
साईं गीता की महिमा किसी किसी ने जानी।।
मंगल करै अमंगल हरै साईं गीता का पारायण।
दू:ख कष्ट हर लेवैं सब साईं हरि नारायण।।

मेरा प्रगट रूप है श्री साईं गीता

साईं गीता पढ़ो और पढ़ाओ, सुनो और सुनाओ। अन्त में साईं गीता सुनते हुए शरीर छोड़ो पार हो जाओगे। नहीं सुन सकते तो साईं गीता अपने सीने से लगा लो। साईं माँ को अनुभव करो और अंत में बता कर जाओ कि मेरी क्या गति हो रही है। जिस ग्रंथ का पारायण संत लोग कर रहे हैं तो उसका पारायण करना गृहस्थियों के लिए बहुत जरूरी है। घर-घर में साईं गीता का पारायण होना चाहिए। साईं गीता मेरा प्रगट रूप है, जब मैं जगत् का खेल करने को आया तो साईं गीता को साथ लाया, जीवों का दुःख-दर्द दूर करने, जीवों को पार लगाने के लिए साईं गीता को मैंने साथ लिया। साईं गीता आज भी हजारों नहीं लाखों घरों को प्रकाश दे रही है। हजारों लाखों के दुःख-दर्द दूर कर रही है। साईं गीता की महिमा को जानो। साईं गीता युग ग्रंथ है। साईं गीता की अथाह शक्ति के सामने कलयुग की शक्ति टिक नहीं सकती। साईं गीता जगत् माता है। जगत् जननी है। शक्ति का स्वरूप है। साईं गीता से कितने अनुभव मिले तो क्या समझे। साईं गीता मेरा प्रगट रूप है। हजारों-लाखों के दुःख-दर्द भयानक से भयानक बीमारियाँ, रोग दूर होते जा रहे हैं साईं गीता की सच्चे मन से शरण लेने से। साईं गीता की शरण लेना अपने साईं की शरण लेना है। साईं गीता केवल अध्यात्म में नहीं चलाती अपने संसारी कार्य भी कराती है।

साईं गीता का परिवार दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहा है। साईं गीता के द्वारा मैं करोड़ों, अरबों, खरबों को प्रकाश दूँगा। साईं गीता के द्वारा मैं प्रकाश दे रहा हूँ। साईं गीता सच्ची भगवती माँ है। कोटि-ब्रह्मण्डों की माँ है। साईं गीता भक्तजनों को अमृत देने और दुष्टजनों का नाश करने आई हैं। साईं गीता ग्रंथ नहीं है ईश्वर की ईश्वरीय शक्ति है। जो सच्चे मन से साईं गीता के मार्ग पर चलेगा मैं एक-एक के द्वारा लाखों का उद्धार करूँगा। साईं गीता पहला कदम है। साईं गीता भगवती माँ है, अपने बच्चों की रक्षा करती है, कल्याण करती है। हर घर में साईं गीता पहुँचाओ ये ही तुम्हारा aim होना चाहिए।

★ ★ ★

श्री साईं गीता के दोहे

साईं गीता का मार्ग ले जाए दसवें द्वार।
हर से बिछड़ा जीवड़ा पाए हरि गोद अपार।।

साईं गीता सेवियो साईं रख मन माहीं।
साईं को ही जानियो मात पितो गुरु साईं।।

साईं गीता रच रचना तारी।
साईं हरे कुसंकट भारी।।

SAI PUBLICATIONS
www.shrianandsai.org

तुम्हारी रक्षक है श्री साईं गीता

मैं अपनी पहिचान दे रहा हूँ, पहिचान बिना भक्ति नहीं है। साईं गीता आने का मतलब क्या है। देवी-देवता भी साईं गीता देख कर मुँह में उंगलियाँ डाल रहे हैं, ये माँ हमें नहीं मिली जगत् को मिली। देखो साईं गीता मैं ब्रह्म लोक से ले कर आया। जो साईं गीता देवताओं को नहीं मिली वो मैं अपने भक्तों के लिए लेकर आया।

मैं जीवन की अंतिम सच्चाईयाँ गुरु रूप से देता हूँ। पोथी का ज्ञान काफी नहीं है। साईं गीता जगत् पावनी माँ है। पतित पावनी माँ है। पतितों को पावन करने वाली माँ हैं। मेरा ये चोला चले जाएगा पर साईं गीता तुम्हारे पास रहेगी। मेरा ये चोला जाने के बाद साईं गीता मेरा रूप समझो। साईं गीता से जो कुछ मांगोगे तुमको मिलेगा। साईं गीता तुम्हारी पूर्ण रक्षा करेगी। इस सच्चाई को दृढ़ करना है। जहाँ-जहाँ साईं गीता जगत् में गई हुई है, वहाँ-वहाँ मेरी रक्षा गई हुई है। हजारों जगह मेरी रक्षा पहुँची हुई है। साईं गीता किसी को देना, साईं को देना है। साईं गीता का दान करना, इस जैसा दुनियाँ में कोई दान नहीं है। साईं गीता का दान महान यज्ञ के बराबर है। जो कुछ गुरु से सुनते हो, यदि वो भूल गए तो अपने गुरु का ध्यान करके साईं गीता खोलो, तुमको पूरा रास्ता मिल जाएगा। साईं गीता हमारा हर मतलब पूरा

करती है। मेरे बिना कुछ भी नहीं है, मैं ही तुम्हारा सच्चा साथी हूँ। यह चोला जाएगा तो मेरा प्रगट रूप जगत् से चला जाएगा। तब तुम लोगों को समझ लगेगी कि जब जगत् में साईं प्रगट होते हैं तो कितने जीवों का कल्याण होता है। मेरे इस चोले के पास बैठ जाना ही सत्‌संग है, मैं ही सच्चाईयाँ दे रहा हूँ। साईं गीता युग ग्रंथ है। निमाणियों के माण, निथाहों की थाह, निओटियों की ओट, निराश्रयों के आश्रय, निपतियों के पत, बाबा साईंनाथ की यह जगत् को पावन देन है।

साईं गीता सब कुछ है। मेरे इन शब्दों को किसी भी हालत में भूलना नहीं। हर बात में, हर हालत में हर मुश्किल में तुम्हारी रक्षा करेगी। इसको भूलना नहीं। गुरु वाणी भूलों को राह लगाती है। मुझमें और साईं गीता में भेद नहीं है। साईं गीता के हजारो **miracles** सारे जगत् में हो रहे हैं। साईं गीता की सच्चे मन से निष्काम भाव से प्रचार करने वालों की रक्षा होएगी ही। जो घर-घर में साईं गीता का प्रचार कर रहे हैं वो मेरी आत्मा हैं। उनका पूरा पहरा मैं देता हूँ। मेरा ये चोला जाने के बाद जो भी निष्काम भाव से मेरी इस जगत् माता की, अमृत की सेवा करेंगे वो बड़ी आसानी से इस भव सागर से तर जाएंगे। साईं गीता सत्य है, सत्य है, सत्य है। साईं गीता सत्य है पूर्ण सत्य है, पूर्ण सत्य है, पूर्ण सत्य है। इस सच्चाई को दृढ़ करो। जो इस सच्चाई से हटेगा वो सत्य

से हटेगा। साईं गीता को अपनी माँ समझो इस सच्चाई को दृढ़ करना है।

साईं गीता की पहिचान मेरे मुख से सुनो, जो भी आया उसने एक दिन जाना ही है। आना उसी का सफल है जो सदा के लिए आने जाने के चक्कर से छूट जाता है। आने-जाने के चक्कर से सदा छुड़ाने के लिए मैंने जगत् को साईं गीता दी है। *जो भी सच्चे मन से अर्पित होकर साईं गीता का पारायण करेगा, साईं गीता में रहेगा, साईं गीता को अपने जीवन में लायेगा उसका चौरासी का चक्कर खत्म होगा ही। ये मेरी अटल वाणी है।* जो साईं गीता को अपनाता है वो मुझे अपनाता है। इस सच्चाई को दृढ़ करो। मैं ही सर्व जगत् की आत्मा हूँ, मैं ही सब प्राणियों के अंदर रमा हुआ सब प्राणियों को जीवित कर रहा हूँ। सबसे सब कर्म करा रहा हूँ। इस सच्चाई को समझो। साईं गीता क्या करती है जीवों में मेरी महिमा प्रगट करती है, कि मैं सब कुछ हूँ। इस सच्चाई को दृढ़ करो। साईं गीता जगत् को निष्काम भक्ति सिखाती है। और निष्काम भक्ति के बिना जब से जगत् बना है आज तक किसी ने ईश्वर को पाया नहीं है। वो ही साईं गीता सिखाती है। साईं गीता मेरी आत्मा है। मेरे प्राण है। साईं गीता की वाणी मेरा रूप है। मेरा निराकार ही नहीं साकार रूप भी है। साईं गीता के एक-एक शब्द में मैं आप समाया हुआ हूँ। जो इस सच्चाई को दृढ़ कर लेता है वो फिर

साईं गीता की शरण छोड़ता नहीं है। आज कितनी दुनियाँ ऐसी है जो साईं गीता के सहारे जी रही है। जिनको जीवन के हर एक दिन में साईं गीता की रक्षा का अनुभव हो रहा है। वो जानते हैं जब से हम साईं गीता की शरण में आए हैं हमारे जीवन ने पल्टा खा लिया है। किसी का हाथ हमारे सिर के ऊपर आ गया है जो हमारी रक्षा करता है। हर स्थिति में हर मुश्किल में हमारी रक्षा करता है। जो भी साईं गीता की शरण में आया है और युग-युग में आएगा उसके ऊपर मेरी रक्षा का हाथ आएगा ही। सच्चे मन से जो साईं गीता की आरती ही कर लेगा उसके सब पाप ताप मैं हर लूंगा। मेरा जन मेरी खुशी प्राप्त करने के लिए जीता है और मेरी खुशी साईं गीता में रहने में है। जो साईं गीता में रहता है जो साईं गीता का पारायण करता है और अपनी तरफ से साईं गीता में रहने का जतन करता है वो मेरी खुशी को, दया को प्राप्त करता है।

साईं गीता के पहले पेज पर जो तस्वीर बनी है वो मैंने बनवाई है। तुमको नहीं सारी दुनिया को बताने के लिए कि मैं जगत् में क्यों आया। वो तस्वीर बहुत गहरी समझ दे रही है। मुझसे प्रार्थना करो बाबा मुझे इस तस्वीर का मर्म समझाओ। झूठ, छल, कपट, फरेब जो इससे नहीं बचेगा वो सीधा नरक में जाएगा। जो सादगी, सच्चाई में रहेगा उसे मैं नन्हा बालक बना कर अपनी गोद में उठा लूंगा। ये मेरे आने

का मतलब है। मैंने स्वयं वो तस्वीर बनाई है। अपना आने का मतलब जगत् को बताने के लिए। झूठ, छल, कपट, फरेब को छोड़ कर बच्चे बन कर मेरी गोद में खेलो। बच्चे बन कर रहो। मैं जब यहाँ से जाऊँगा सपने में या आकर अपने भक्तों को बताऊँगा कि देखो मैं वो तस्वीर सिद्ध करके गया कि नहीं गया। जहाँ ये चार चीज़ों में से एक भी चीज़ है वहाँ जहर भरी पड़ी है। मैं तुमको अपना बच्चा समझ कर ये वाणी बोल रहा हूँ।

★ ★ ★

श्री साईं गीता के दोहे

खेल करन मैं आया जग में खेल करन मैं आया।
भक्तजनों को पार करन को साईं गीता लाया
जग में खेल करन मैं आया।।

भक्त मेरे हैं मैं भक्तों का यही सिखाने आया।
जग में खेल करन मैं आया।।

अपनी पावन लीला कर के जग को सुखी बनाया।
जग में खेल करन मैं आया।।

रेखाएं बदल जाती हैं श्री साईं गीता में रहने से

पूरी राम चरित्र मानस भगवान भोलेनाथ ने लिखवाई हुई है। जिन्होंने तुलसी दास के अंदर बैठ कर राम चरित्र मानस लिखवाई उन्होंने ही इस शरीर में बैठ कर साईं गीता लिखवाई। भेद नहीं है हमारे अंदर से भेद बुद्धि कितनी गई है। हम एकता में कितने स्थापित हुए हैं। राम जी की भक्ति और साईं की भक्ति में भेद क्या है। महावीर हनुमान जी थोड़े दिन पहले बोले राम में और साईं में भेद क्या है। जब तक भेद बुद्धि हमारे अंदर से जाती नहीं है तब तक मंजिल दूर है। इस भेद बुद्धि को दूर करना है दरबार में सबको मेरी तरफ से नई साईं गीता आने की बधाई हो। इसीलिए क्योंकि इसमें कलाम आया है। हम मुसलमानों को नीचे कैसे माने। हमारे बाबा हर थोड़े दिन के बाद कव्वाल लोगों को बुलाते थे और सारी-सारी रात कव्वालियाँ सुनते थे, भेद क्या है।

एक साईं गीता दे देना एक महायज्ञ करने के बराबर है। ये भगवती माँ जिस परिवार में चली जाती हैं, वहाँ से धीरे-धीरे सब अमंगल भाग जाते हैं, हम अपने संस्कारों को धो सकते हैं। साईं गीता का पारायण करने में ही हमारे पिछले जन्मों के खोटे संस्कार धुलते चले जाते हैं। यदि हम सेवा में लग जाते हैं तो बात ही क्या है। साईं गीता पूरी भरी

पड़ी है सादगी और सच्चाई से। सादगी सच्चाई में नहीं रहेंगे तो साईं गीता भी पढ़ कर क्या लिया। जहाँ तुम एक साईं गीता देते हो उस प्राणी की प्रारब्ध उसी पल से बदलनी शुरु हो जाती है। जहाँ कोई साईं गीता का पारायण करता है वहाँ उस प्राणी की रेखाएं बदलनी शुरु हो जाती है। इस महामंत्र का प्रचार करो ॐ साईं श्री साईं जय श्री साईं।

जै मैय्या

हजारों जीव मुक्त होने वाले हैं जिस जगह से साईं गीता उत्पन्न हुई वहाँ से कोई चौरासी में पड़े मुझे अच्छा नहीं लगेगा। जितना साईं गीता का परिवार जगत् में बढ़ेगा उतना जगत् का बोझा हल्का होता जाएगा। हजारों लाखों लोग पार होने वाले हैं। तो मेरी हार्दिक इच्छा है जहाँ से साईं गीता उत्पन्न हुई वहाँ कोई भी प्राणी बंधन में न रह जाए चौरासी में न रह जाए। झूठ कर्म करना नहीं, झूठ कमाई करनी ही नहीं, थोड़े से थोड़े में गुजरान करना है। वासना की जड़ ही कट जाती है। तुम्हारे सब के लिए मौका है।

सब प्राणियों को सुखी बनाने के लिए मैंने साईं गीता रची है। अमृत सागर रचा है तुम्हें उनको घर-घर पहुँचाना है। मैं तुम्हें अपनी इस पावित्र गोद में लाया हूँ जीवों की सेवा के लिए। तुम्हारा सबका मेरे साथ पिछले जन्मों का संबंध है। मेरा हाथ बँटाना तुम्हारा कर्तव्य है। जहाँ *साईं गीता चली*

जाती है वहाँ जीवों के दुःख-दर्द दूर होने शुरु हो जाते हैं। गुरु पूजा के दिवस हमने अपने गुरु की पहिचान करनी है। जो सेवा का कार्य यहाँ से हो रहा है जो प्रकाश यहाँ से चारों ओर फैल रहा है, इस प्रकाश को अपने गुरु के अंदर देखना है। जीव गद्-गद् हो उठेंगे। जहाँ साईं गीता जा रही है। वहाँ रक्षा का हाथ पहुँच जाता है। साईं गीता जगत् पावनी माँ है। जगत् माता है। साईं गीता का पारायण रोज किया करो। साईं गीता की आरती से तुम्हारी सब मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी। सच्ची गुरु पूजा बाहर फूल चढ़ा देने में नहीं है, जितने भी ग्रंथ बने हैं सब गुरू के अंदर से दे रहा हूँ गुरु की महिमा को जानना है।

देव वाणी *लाखों प्राणी तर जाएँगे सुन मेरी आवाज* हमारे जाने के बाद साईं गीता तो सब कुछ होएगी ही। ये देव वाणी उससे कम नहीं होएगी। उससे ज्यादा होएगी। जो कोई मुराद मांगेगा उसकी पूरी होएगी ही। आज का दिन इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाएगा। ये जगत् की सेवा है पूरी रचना की सेवा है एक दूसरे से बढ़-चढ़ कर सबने इसमें हाथ बंटाना है।

जै मैय्या

सभी तीर्थ साईं गीता में आ जाते हैं। श्री साईं गीता के पारायण के लिए पाँच मिनट रोज देने चाहिए। जो भक्ति-

भाव से साईं गीता का पारायण करता है। साईं उससे चिमट जाते हैं बोल क्या चाहिए, नहीं मांगता तो उसकी प्रारब्ध देखते हैं। इसको क्या तकलीफें हैं, वो अपने आप ही दूर करते जाते हैं। साईं गीता से पूरा फायदा उठाओ। अमृत सागर से फायदा उठाओ। लाखों के जीवन बदल रहे हैं। आप लोगों को भी फायदा उठाना चाहिए।

जितना साईं गीता का परिवार बढ़ता जाएगा उतना कलयुग पीछे हटता जाएगा। जहाँ-जहाँ साईं गीता पहुँचती जा रही है। वहाँ कलयुग पीछे हटते जा रहा है। हजारों लोगों को हजारों अनुभव होते जा रहे हैं साईं गीता व अमृत सागर के। तुम भी सच्चे मन से सेवा करो लोगों को बताओ। साईं गीता की शरण में आने में ही जीव का कल्याण है।

साईं गीता जगत् माता है। साईं गीता में कुछ कमी नहीं है। साईं गीता पढ़ कर भी हम दुःखी रह रहे हैं तो हमारे विश्वास में कमी है। लाखों जीव साईं गीता पढ़-पढ़ कर आनंदित हो रहे हैं। मैं जगत् को सुख देने आया हूँ सुख देकर ही जाऊंगा। झूठ, छल, कपट, फरेब इनका नाश होना लाजमी है नहीं तो लोगों का ईश्वर में से विश्वास हट जाएगा। मेरा खेल होकर रहेगा। सारी दुनियाँ मेरा खेल देखेगी। देखते जाओ क्या होता है।

जै मैय्या

मैं बाबा साईंनाथ जगत् का ईश्वर बोल रहा हूँ साईं गीता लिखने वाला जगत् में मुड़ कर पैदा नहीं होने वाला है ये मेरा वचन है। वो ईश्वरीय शक्ति है। ऐसा समय आने वाला है हर घर में साईं गीता के चर्चे होंगे। साईं गीता लिखने वाला मुड़ कर दुनियाँ में पैदा नहीं होएगा। साईं गीता गृहस्थियों को ही नहीं साधुओं को, संतो को हर एक को ज्ञान देगी। अमृत सागर माँ की दया के बिना कोई नहीं लिख सकता। साईं गीता तुम्हारी माँ है। जितना साईं गीता के प्रति तुम्हारा प्रेम रहेगा उतना तुम मेरी दया को पाओगे। अगर ईश्वर ने शक्ति दी है तो साईं गीता दान करो। मैं तुम्हारे सब दुःख दर्द खा जाऊंगा। साईं गीता का दान साईं गीता की सेवा जैसी कोई सेवा नहीं साईं गीता जिन-जिन महात्माओं के पास जा रही है वो अपना जीवन धन्य मान रहे हैं। सब आश्रमों में साईं गीता पहुँच रही है। साईं गीता संतो का भी भूषण है।

सब कुछ करते हुए साईं गीता को नहीं भूलना। साईं गीता मेरा हृदय है। साईं गीता में मैंने अपना सब कुछ डाल दिया है। हर रोज थोड़ा साईं गीता पढ़ना यह नियम बना लेना चाहिए। उससे कर्म कटता है। माई की कृपा मिलती है। साईं गीता और साईं दो नहीं हैं एक हैं। साईं गीता का गुणवाद मैं भी नहीं कर सकता। साईं गीता अमर है युग आएँगे युग जाएँगे साईं गीता का प्रचार बढ़ते ही चले जायेगा।

सब से बढ़ कर जगत् में साईं गीता का प्रचार है। जिस घर में साईं गीता चली जाती है। अब वो घर दिखा रहे हैं – दो जने हैं पति-पत्नि वो साईं गीता पढ़ रहे हैं। पचास बरस बाद उसके बच्चे पढ़ रहे हैं फिर आवाज़ आती है सौ बरस के बाद उनके बच्चे पढ़ रहे है। फिर आवाज आती है। पचास बरस के बाद उनके बच्चे पढ़ते जा रहे है। जहाँ साईं गीता जा रही है। ३०० बरस तक यह चलती ही रहेगी। एक साईं गीता देने से ३०० बरस तक अनेकों जीवों का कल्याण होते जाएगा। साईं गीता जिस घर में पड़ी है उनके मनो को खींचेगी। ३०० बरस तक जगत् का कल्याण होते रहेगा। बताओ इससे बढ़ कर और सेवा क्या हो सकती है।

ॐ साईं गीता जै साईं गीता। साईं गीता श्रुति है स्मृति नहीं है। दो प्रकार के ग्रंथ होते हैं। एक श्रुति जो भगवान की तरफ से आते हैं। एक स्मृति जो संत महात्माओं की तरफ से आता है। ये साईं गीता पाँचवा वेद है। ये कोटि सूर्यों के समान प्रकाश देने वाला है। साईं गीता सबसे पहले तुम्हारे सबके लिए है फिर कोटि-कोटांग जीवों के लिए है। पवित्र ज्ञान की ज्योत जग गई है। साईं गीता परम प्रकाश स्वरूप है। साईं गीता जगत् जननी माँ है, जो जगत् को सब कुछ देती है। साईं गीता को जिसने समझ लिया वो दुःखों से परे चले गया, दुनियाँ इधर से उधर हो जाए हो ही नहीं सकता कि तुम्हारे प्रश्न का उत्तर श्री साईं गीता से ना मिले। साईं गीता के अनुसार चलेंगे तो हमारी सब मुश्किलें हल हो

जाएंगी। तुम्हारी हर मुश्किल को साईं गीता हल करेगी। गृहस्थ की मुश्किलें हों या अध्यातम् की, कुछ भी समझना हो साईं गीता **is a sure guide.**

साईं गीता अमर ग्रंथ है जब तक दुनियाँ कायम रहेगी। तब तक ये ग्रंथ अमर रहेगा। साईं गीता पढ़ने वाले की हानि हो ही नहीं सकती। साईं गीता को अपनाने वाला पार होकर ही रहेगा। साईं गीता में मैंने अपनी पूरी शक्तियाँ भर दी हैं। साईं गीता में मैंने ढेरों आशिर्वाद भर दी हैं। साईं गीता में मैंने अपना पूरा रास्ता बता दिया है। साईं गीता दूसरों को भी रास्ता बताएगी। साईं गीता अमृत का अथाह सागर है। साईं गीता का पारायण करने वाले की रक्षा होकर ही रहेगी। साईं गीता की महिमा मैं साईंनाथ खुद भी नहीं बता सकता। मैंने अपना सब कुछ इसमें डाल दिया है। तुममें से कोई नहीं रहना चाहिए जो साईं गीता का पारायण न करे। जितना भी कोई साईं गीता का पारायण करेगा उतना उसका कर्म थोड़े-थोड़े में कटते चले जाएगा। साईं गीता अमृत का अथाह सागर है। साईं गीता का पारायण करने से मन के सारे संशय दूर हो जाते हैं। साईं गीता पढ़ने वाले की पूर्ण रक्षा होती है। साईं गीता एक ऐसी माँ है जो सब कुछ देती है। कुछ भी ऐसा नहीं जो नहीं देती। जो साईं गीता को अपनाता है वो मुझे अपनाता है। साईं गीता पढ़ने वाले को कोई और ग्रंथ-पढ़ने की जरूरत नहीं रहती। सब कुछ इसमें आ जाता है। साईं गीता पढ़ने वाले को कहीं जाने की जरूरत नहीं

रहती, सब कुछ यहीं पर मिल जाता है। साईं गीता सच्चा सत्संग है मेरे साथ संग है। साईं गीता वेद है, साईं गीता पुराण है, साईं गीता सब कुछ है। ये एक ऐसा ग्रंथ मैं जगत् को देकर जाऊँगा जो सदा-सदा,जब तक दुनियाँ रहेगी। एक सच्चे गुरु का काम करेगी। किसी को कोई भी शंका है अध्यातम् में या संसार में साईं गीता उसका जवाब देगी। तुम्हारे संसार की हर मुश्किल का जवाब साईं गीता है। साईं गीता में मुझ पूर्ण गुरु की पूरण सीख है। इस बात को तुम सबने दृढ़ करना है। जो भी इस पर चलेगा वो तर जाएगा। जो भी इसको सच्चे मन से अपनाएगा वो पार हो जाएगा। अपने जीवन की अंतिम घड़ियों में साईं गीता को भूलना नहीं। जो साईं गीता सुनते हुए मनन करते हुए देह का त्याग करेगा वो सीधा मुझ पारब्रह्म में विलीन हो जाएगा। साईं गीता सुख का सागर है। अमृत का सागर है। सुख का सागर है। सच पूछो तो मैं जो कुछ यहाँ तुमको बताता हूँ, साईं गीता के मर्म खोल-खोल कर ही बताता हूँ। साईं गीता अपनाओ और पार हो जाओ। साईं गीता झूठ, छल, कपट, फरेब, चोरी सब चीज़ों से बचाती है। जो इन चीज़ों से छूट जाता है, वो बच्चा बन जाता है। गलत कर्म करने वाला भक्ति नहीं कर सकता। माया में फंसा जीव भक्त नहीं कहला सकता। साईं गीता का पूरा सार पहले पेज में ही आ जाता है।

★ ★ ★

श्री साईं गीता की महिमा

सच साधना जानन को साईं गीता खोल के देखो।
जो भी पहली लाईन आए ता में साईं इच्छ्या पेखो।।
सुबह सवेरे उठते ही हुक्म साईं का लीजो।
पूरन श्रद्धा भाव से ता का पालन कीजो।।

इस साईं गीता का भाव से करो सदा सप्ताह।
इसमें साईं आप है शक्ति पुंज अथाह।।
जो भी साईं गीता का करै मास पारायण।
ता के हृदय सदा बसै साईं नाम रसायन।।

पारायण के साथ-साथ मन को राखो शुद्ध।
साईं माँ की दया से सत् की होवे बुद्ध।।
प्रेम भाव से जो पढ़े श्रद्धा से जो गाए।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष साईं दया से पाए।।

जो चाहे कल्याण पद पढ़े सुने ये साईं गीता।
जा पर साईं दयाल हों सोई जन ये अमृत पीता।।
कर्म आएँ जब ज़ोर से साईं गीता सुनो सुनाओ।
कर्म ज़ोर न मार सकें साईं गीता का प्रभाओ।।

SAI PUBLICATIONS
www.shrianandsai.org

अमर ग्रन्थ है श्री साईं गीता

श्री साईं गीता अमर ग्रंथ है। साईं गीता ये ग्रंथ अमर रहेगा। साईं गीता में मैंने अपनी पूरी शक्ति भर दिया है। साईं गीता कलयुग का अंधकार दूर करेगी। साईं गीता दुष्टों को भी राह दिखायेगी। साईं गीता की महिमा मैं साईंनाथ खुद भी नहीं बता सकता। साईं गीता में मैंने अपना सब कुछ डाल दिया है। जो जितना भी इस साईं गीता का पारायण करेगा उसके कर्म थोड़े-थोड़े में कट जायेंगे। साईं गीता अथाह सागर है। साईं गीता का अमृत पीना है। साईं गीता का पारायण करने से सारे संशय दूर हो जाते हैं। साईं गीता पढ़ने वाले की पूरी रक्षा होती है। साईं गीता माँ है जो सब कुछ देती है। कुछ भी ऐसी चीज़ नहीं है जो साईं गीता नहीं दे सकती। जो साईं गीता को अपनाता है वो मुझे अपनाता है। साईं गीता पढ़ने वाले को कोई और ग्रंथ पढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती। साईं गीता का संग सच्चा सत्संग है, मेरा संग है। साईं गीता वेद है, पुराण है, शास्त्र है, सब कुछ है। साईं गीता सच्चे गुरु का काम करेगी। साईं गीता में मुझ पूरन गुरु की पूरन सीख है जो भी सच्चे मन से इसका पारायण करेगा वो पार हो जाएगा। अपने जीवन की अंतिम घड़ियों में साईं गीता को भूलना नहीं। जो साईं गीता सुनते हुए और मनन करते हुए देह त्यागेगा वो सीधा मुझमें मिल

जाएगा। साईं गीता सुख का सागर है। अमृत का सागर है। सच कहता हूँ जो मैं यहाँ पर बताता हूँ साईं गीता में से ही खोल-खोल कर बताता हूँ। गलत कर्म करने वाले भक्त नहीं कहला सकते। पहले पेज में ही मैंने सब कुछ बता दिया है।

साईं गीता ही तुम्हारी गुरु है ये चोला छुटने के बाद साईं गीता ही तुम्हारी गुरु रहेगी। साईं गीता ही तुम्हारी गुरु बनेगी। साईं गीता महान गुरु है। ये चोला छुटने के बाद कोई मानव गुरु नहीं बनेगा। साईं गीता ही तुम्हारी गुरु रहेगी। साईं गीता में से जो मिल सकता है वो किसी से नहीं मिल सकता। साईं गीता पूर्ण ग्रंथ है। इस बात को समझने का है।

साईं गीता की महिमा को समझना तुम सबके लिए अत्यंत जरूरी है। साईं गीता से प्यार करना अपने साईं से प्यार करना है। जब किसी का भी अंतकाल आए हमने साईं गीता सुनना है। साईं गीता में शुरु से आखरी तक श्लोक ही श्लोक हैं। क्योंकि वो मेरे बनाए हुए हैं। बात उसी की बनेगी जो जीवन में भी साईं गीता को अपनाएगा। जब-जब मन अशांत हो साईं गीता को खोल कर अपने सीने पर रख लो तुम्हारा मन शांत हो जाएगा। साईं गीता मेरा प्रगट रूप है। मेरा हदय है साईं गीता की ऐसी पूजा करो जैसे तुम मेरे साकार रूप की करते हो। तुम साईं गीता को अपना लोगे

तो अपने साईं को अपना लोगे। तुम भी अपने आखरी समय में अपने को साईं गीता सुनने में लगा लोगे तो साईं तुम्हें अपने में मिला लेंगे। साईं गीता की महिमा साईं आप भी नहीं बता सकते। इससे ज्यादा क्या कहूँ जो थोडा सा भी साईं गीता रोज़ पढ़ लेता है उसका रोज़ का रोज़ पाप कट जाता है। जो साईं गीता का प्रचार करता है लोगों में साईं गीता बाँटता है उसका पाप कटते जाता है। साईं गीता का अनादर कभी नहीं होना चाहिए। कभी भगवान की तस्वीर को ग्रंथ को mishandle नहीं करना। हमारी तस्वीर को कोई भूल कर भी नमस्कार कर देता है तो उसका संस्कार बन जाता है।

साईं गीता को अपने जीवन का आधार मानो। साईं गीता में सब कुछ आ जाता है। साईं गीता का पारायण करने से जन्म-जन्मांतर की सोई हुई आत्मा जाग पड़ती है। साईं गीता का पारायण करने से जीवों का कल्याण होता है। साईं गीता का पारायण करने से जीव सीधा मुझ पारब्रह्म में मिलकर एक हो जाता है। जो सदा साईं गीता में रहता है वो मेरा है। साईं गीता की पूजा करने से सब पाप ताप कट जाते हैं। साईं गीता के सामने रोज अगरबत्ती जलाने से जीव का कर्म कटता है। साईं गीता की आरती उतारने से जीव की सद्गति होती है। साईं गीता ग्रंथ नहीं है मेरी आत्मा है। साईं गीता में मैं आप हूँ। जो साईं गीता में रहता है वो मुझे अपनाता

है। जो साईं गीता का प्रचार करता है वो मुझे सबसे प्रिय है। जो साईं गीता का पारायण अपने घर में कराता है उसके सब पाप ताप धुल जाते हैं। समझने का है। साईं गीता में अपना जीवन ढालो, बात बन जायेगी। यही साईं गीता का काम है। यही गुरु का काम है। ऊपर से नीला-नीला जाते जा रहा है और सफेद-सफेद दिखते जा रहा है। जो शुद्ध मन से साईं गीता पर चलता है उसके ऊपर सफेद-सफेद दिखते जा रहा है। जो शुद्ध मन से साईं गीता पर चलता है उसके ऊपर सफेद-सफेद रहते जा रहा है। अध्यातम में करनी की ओर सारा ध्यान है। करनी यदि ठीक है तो बात बनती है। करनी यदि ठीक है तो जो कदम-कदम पर बाधे आते हैं वो दूर होते जाते हैं। तो साईं गीता दोनों तरह से जीवों की सेवा करती है। साईं गीता साधना कराती है। साईं गीता भक्ति ज्ञान पर चलाती है। साईं गीता सेवा कराती है, पाप काटती है। और सबसे बड़ी बात दुष्ट कर्मों का फल सामने दिखाती है। गलत कर्मों का फल सामने दिखाती है। जीव को खबरदार करके रखती है। गलत काम मत करो गलत काम का अंजाम ठीक नहीं होता है। भविष्य को कौन जानता है। साईं गीता पढ़ने वाला जान ले कि जीव की गति कैसी होने वाली है। जहाँ सत् साधना की रोशनी डल गई वहाँ पर खोटे कर्म की जगह नहीं है। इस समय साईं गीता की कितनी जरूरत है। साईं गीता भटकते जीवों को राह बतायेगी। साईं गीता बताती है अपने पापों के लिए

सच्चे मन से क्षमा मांगो। एक जगह साईं गीता ग्रंथ रखा है। उसमें से इतना प्रकाश निकल रहा है कि जो अंधेरे में प्रकाश दे रहा है। फिर वो ही दृश्य सफेद शलगम नीला हो गया था। जो साईं गीता पढ़ते हैं उनके आत्मा रूपी शलगम से नीला-नीला हटते जा रहा है सफेद होते जा रहा है। जो-जो साईं गीता पढ़ते जा रहा है उसमें रहते जा रहा है वो नीला शलगम सफेद होते जा रहा है, आत्मा का। बाबा बोल रहे हैं शलगम क्यों बोला है आत्मा का स्वरूप सफेद है, निर्मल है। जो अंतरमुख में चले जाते हैं वो सफेद होते जाता है। जो बाहरमुखी होता है वो नीले रंग का हो जाता है। *कोटि सूर्यों सम तेज तुम्हारा, ज्ञान भक्ति का पुंज अपारा।। मैं हाथ उठाकर तुम सबको वचन देता हूँ। साईं गीता मेरी आत्मा है जो इसका श्रद्धा भाव के साथ सिमरन करेगा और अपना जीवन उसमें ढालेगा मैं बड़ी आसानी से उसको अपने में मिला लूँगा।* साईं गीता में पूर्ण सच्चाईयाँ है। मेरा ही ज्ञान है, भक्ति है, कर्म मार्ग है। मैं चाहता हूँ तुम सब साईं गीता को अपनाओ, अपने जीवन का आधार मानो। इसमें सब कुछ आ गया है, जो कुछ बचा था वो सब मैंने साईं गीता में दे दिया है। *जो भी प्राणी साईं गीता को अपना आधार मानता है वो मेरा हो जाता है। ये मेरा अटल वचन है।* तुमसे कितने भी संसार भर के पाप क्यों न हुए हों यदि तुम इस साईं गीता को अपनाओगे तो मैं तुम्हारे सारे पाप काट दूंगा। साईं गीता में मेरी शक्ति है। जब तुम्हारा

SAI PUBLICATIONS
www.shrianandsai.org

अंतकाल आए साईं गीता पढ़ो, नहीं पढ़ सकते तो किसी को पास बिठा कर पढ़ाओ। जो साईं गीता के प्रचार में हाथ बटायेगा वो मेरी दया को पायेगा। धर्मराज का दरबार बता रहे हैं। हाथ जोड़ कर धर्मराज बाबा के सामने प्रार्थना कर रहे हैं – बाबा जी! कुछ करिये जगत् में इतना दुःख है। धर्मराज की बात सुन कर बाबा सिर हिलाते हैं। तो क्या देखते हैं बाबा के दोनों हाथो में दो ग्रंथ हैं। इधर साईं गीता उधर अमृत सागर यह दो ग्रंथ हैं जगत् के कल्याण के लिए। इतना कह कर बाबा अंतरध्यान हो गये। कह रहे हैं कईयों को मैं यह अनुभव देने वाला हूँ। उनको अंधेरे में प्रकाश दिखेगा। परन्तु यह तो चमत्कार है। ये प्रकाश तो अंतरंग में है। *जय साईं गीता जय साईं गीता।* मुड़ कर फिर पीछे का दृश्य दिखा रहे हैं। जगत् में इतना पाप बढ़ गया है, इतना पाप बढ़ा है कि गंगा जी में भी आग लगी हुई है। आपकी दया ही जीवों को बचा सकती है। यह दोनों ग्रंथ उनकी दया के आंसू हैं। सारा दृश्य सामने आ रहा है। लेकिन हम बच्चों के कल्याण के लिए तरह-तरह की लीला करके अपने रास्ते लाते हैं। *साईं गीता, अमृत सागर को अपनाओ दुःख दर्द भाग जाएंगे।* ऐसे पवित्र पावन वचन बाबा बोल रहे हैं। जय साईं गीता, जय साईं गीता ...... बाबा बहुत सुन्दर दृश्य दिखा रहे हैं ऐसा कभी देखा नहीं है। साईं गीता ग्रंथ रखा है इतना सुन्दर गोटा लगा है। इतना प्रकाश निकल रहा है। ऊपर तीन रूप खड़े हैं। शंकर और पार्वती ऐसे

कर रहे हैं बाएँ ओर राधा जी और कृष्ण जी खड़े हैं इधर भगवान श्री राम और महारानी जानकी जी खड़े हैं। उनका हाथ उठा हुआ है साईं गीता के ऊपर। श्री महाराज खड़े होकर उनकी तरफ देख रहे हैं सब लोग बड़े भाव से उन आठों रूपों को नमस्कार करो। बाबा अपने आंसू पोंछ रहे हैं धीरे-धीरे से बोल रहे हैं मेरी सेवा करो।

जय साईं गीता जय साईं गीता ....।

जै मैय्या

मुझे अपनाना है तो साईं गीता को अपनाओ। *जो साईं गीता का हर रोज़ श्रद्धा सहित पारायण करता है। उसकी सद्गति होने ही वाली है। जिस घर में हर रोज़ साईं गीता का श्रद्धा सहित पारायण होगा वहाँ से सब अमंगल धीरे-धीरे भाग जाएंगे।* साईं गीता एक कवच है जो अपने भक्तों की सदा रक्षा करेगी। साईं गीता भाव सहित पढ़ना चाहिए। साईं गीता की हर लाईन के पीछे बाबा खड़े हैं। हमारा दर्शन करते हुए पढ़ो। साईं गीता की महिमा अपरम्पार है। साईं गीता के ध्यान मात्र से ही जीव का पाप कटेगा। जो सदा भाव सहित साईं गीता को पढ़ेगा, पारायण करेगा उसकी रक्षा हम अवश्य ही करेंगे। साईं गीता परम धाम तक ले जाने वाली है। साईं गीता परम धाम में पहुँचाने वाली है। बहुत सुन्दर दृश्य दिखा रहे हैं ऊपर के लोको में जगह-जगह पर साईं गीता लेकर एक दूसरे को दिखा रहे हैं। देखो ये बाबा

साईंनाथ का ग्रंथ है। सब एक दूसरे को साईं गीता सुना-सुना कर आनंद ले रहे हैं। जो एक साईं गीता किसी को देता है वो एक अश्वमेघ यज्ञ का फल पाता है। जहाँ एक साईं गीता गई तो वहाँ बीस जनों का उद्धार होगा। यदि तुम्हारे से एक महिने में एक साईं गीता जाती है तो अपने जैसे भाग्यवान कोई मत जानो।

साईं गीता पूर्ण माँ का पूर्ण ग्रंथ है। कौन सी ऐसी चीज़ है जो साईं गीता नहीं दे सकती। भक्ति मुक्ति दे सकती है। *साईं गीता साईं की आत्मा है। साईं गीता साईं का हृदय है। साईं गीता अविनाशी तत्व में विलीन करने वाली है। साईं गीता के दर्शन मात्र से पाप कटता है।* जो साईं गीता को अपना लेता है वो बड़ी आसानी से भव सागर से पार हो जाता है। अपनाने का अर्थ जो साईं गीता में रहता है। साईं गीता का ध्यान पाप काटता है। साईं गीता के श्लोक मन में मनन करना चाहिए। साईं गीता का सार दो शब्दों में साची करनी सादा रहनी।

जो साईं गीता है सो मैं हूँ। साईं गीता धर्म, कर्म, भक्ति, ज्ञान, उपासना का सार है। सबका निचोड़ इसमें है। साईं गीता अपरम्पार है। साईं गीता ईश्वरीय वाणी है। इससे परे कुछ नहीं है। साईं गीता की हर रोज पूजा करनी है। आरती किया करो। श्री साईं गीता, इस महान ग्रंथ में मैंने अपना पूरा सार बता दिया है। अपना पूरा रास्ता बता दिया है। साईं गीता के एक-एक भजन को पकड़ कर उसको मनन करते जाओ और उसमें

अपना जीवन ढालते जाओ। हम साईं गीता के हुक्म के बाहर तो नहीं जा रहे हैं। साईं गीता अमृत है। जो ये अमृत पियेगा सो अमर हो जायेगा। खुद भी ये अमृत पीओ और दूसरों को भी पिलाओ। सब तैयार हो जाओ जगह-जगह इस ग्रंथ का प्रचार करना है। *जो साईं गीता का प्रचार करेगा वो मुझ साईं परम आत्मा में विलीन हो जाएगा।* साईं गीता के बिना तुम्हारा कुछ भी नहीं है।

★ ★ ★

श्री साईं गीता के दोहे

साईं गीता अमृत सागर जग तारन को आए।
साईं माँ ने कोटि जीव भव से पार लगाए।।

साईं गीता जानियो प्रगट साईं का रूप।
जग को पावन करने आई मैय्या परम् अनूप।।

साईं गीता जान ल्यो सतूगुरु का परूशाद।
हर शब्द में हो रहा साईं का गुणवाद।।

अंतकाल जब आए तो सुनो ये अमृत बानी।
हृदय राखो साईं मूरत अति प्रिय मन भानी।।

साईं गीता मनन कर मोह माया छुट जाएँ।
साईं गीता के श्लोक अमृत देत पिलाएँ।।

ज्ञान का भंडार है श्री साई गीता

सारा जगत् साईं गीता को पूजेगा अपनी माँ जान कर। पूरा जगत् साईं गीता को साईं का साक्षात रूप जान कर पूजने वाला है। साईं गीता की इतनी महिमा है। साईं गीता सब कुछ देगी संसार भी देगी, अध्यातम् भी देगी, ब्रह्म भी देगी। साईं गीता का ज्ञान कोई दे ही नहीं सकता, नामुमकिन है। साईं गीता की महिमा कोई बता ही नहीं सकता, इस पूर्ण ग्रंथ की महिमा मनुष्य बुद्धि भी नहीं बता सकती। इस माँ के द्वारा मैं सर्व जगत् का उद्धार करने वाला हूँ। साईं गीता को अगर मैं पाँचवा वेद बोलूँ तो भी कम है। जाते हुए जैसे गुरु गोविन्दसिंग जी महाराज ने बोला था, आज्ञा भई अकाल की गुरु मानियो ग्रंथ ....।

ये ही वाणी यहाँ होने वाली है सबको आदेश देकर जाऊंगा मेरा ये शरीर छूटने के बाद तुम्हारी गुरु साईं गीता है। सब सिखों को हुक्म है ''गुरु मानियो ग्रंथ। मेरा ये चोला छूटने के बाद सर्व जगत् साईं गीता की ओर देखेगा, जो मिलेगा साईं गीता से मिलेगा, साईं गीता ही तुम्हारी माँ है। साईं गीता ही तुम्हारी गुरु है। साईं गीता ही सब कुछ है जगत् के लिए। सारा जगत् प्रकाशित हो जाएगा साईं गीता से। देखते जाओ मैं क्या खेल करते जा रहा हूँ। जगत् को ये मेरी सबसे बड़ी देन हैं सबसे परे की देन है, वो है जगत् माता साईं गीता। कोटि-कोटांग जीवों को पार लगाने वाली मेरा

SAI PUBLICATIONS
www.shrianandsai.org

प्रगट रूप है श्री साईं गीता। गुरु को मैं कितना महत्व देता हूँ। इसी से देखो, जगत् माता को जिस रूप से मैंने निकाला वो गुरु रूप है। कोई दिन खाली नहीं होना चाहिए जिस दिन तुम साईं गीता नहीं पढ़ो। साईं गीता तुम्हारा संसार भी चलाएगी। दुनियाँ को समझाओ साईं गीता तुम्हारा गृहस्थ भी चलाएगी संसार भी चलाएगी। संसार भी चलाने वाली माँ है कोई शंका आए तो फौरन साईं गीता खोलो।

जै मैय्या

दुनियाँ में कोई ऐसी तकलीफ नहीं है जो साईं गीता दूर नहीं कर सकती। मृत्यु तक से साईं गीता बचा सकती है। कितनों को पूरी साईं गीता कण्ठ है। तुम लोग जो सेवा करने जाते हो हम तुमको आदेश देते हैं दुनियाँ को बताओ, दुनियाँ में कोई दुःख क्लेश नहीं है जो ये माँ ना दूर कर सके। ये माँ पार उतारनहार है। पढ़ो और खुद इसकी महिमा जानो थोड़ा सा खर्च करके यदि दुनियाँ की हर तकलीफ दूर होती है तो कौन पीछे रहेगा। भक्ति, ज्ञान और कर्म के भंडार भगवान श्री दत्तात्रय आदि गुरु की वाणी इस आदि ग्रंथ में हैं। ये आदि ग्रंथ है, कुछ नहीं छूटा है जो ग्रंथ में न आया हो। इस सच्चाई को अनुभव करो। एक-एक शब्द हमारा है जो तुम बोल रहे हो। एक-एक शब्द हमारा लिखाया हुआ है। ईश्वर की आराधना ईश्वर के अपने प्रदान किए हुए शब्दों

में ईश्वर के चरणों में रखना। इस जैसी कोई आराधना नहीं हो सकती। इन शब्दों में अपने आपको गंवा दो। तुम में से जिन्होंने साईं गीता को आजमाया नहीं है वो आजमा के देख ले। मैं हवा में उड़ाने नहीं आया मैं तुम्हें धरती पर चला कर पार लगाने आया हूँ। मैं जंगल भेजने नहीं आया हूँ। मैंने इस बच्चे के द्वारा गृहस्थ-धर्म की महिमा स्थापित करनी है। गृहस्थ में रह कर दयानतदारी से अपनी ड्यूटियाँ देकर तुम ऊँची से ऊँची गति को प्राप्त कर सकते हो मैं जितनों को भी चला रहा हूँ गृहस्थियों को चला रहा हूँ। आज जितने भी बड़े से बड़े संत है साईं गीता पढ़-पढ़ के गद्-गद् हो रहे हैं। ऐसा ग्रंथ पढ़ा नहीं सुना नहीं। गृहस्थी साईं गीता पढ़ कर संत गति से ऊंची गति में जा रहे हैं। साईं गीता पूर्ण भगवान को पाने का पूर्ण रास्ता है। इसको अच्छी तरह से समझने का है।

★ ★ ★

श्री साईं गीता के दोहे

साईं गीता जानियो पूरन माँ का पूरन ग्रंथ।।
इक पूरन में देखियो सभी धर्म सब पंथ।।
पावन साईं गीता को साईं हृदय जान।
पावन साईं गीता जन को देवै निर्मल ज्ञान।।

SAI PUBLICATIONS
www.shrianandsai.org

साईं मूर्त है साईं गीता

मुझ परमेश्वर की आराधना, प्रार्थना करने का सबसे सुन्दर ढंग सबसे उत्तम ढंग कौन सा है। साईं गीता का पारायण। साईं गीता श्रद्धा सहित पढ़ने से अंतरंग की आँखे खुलनी शुरु हो जाती हैं। अंतरंग के मर्म एक-एक करके पता लगने शुरु हो जाते हैं। साईं क्या हैं। साईं गीता पढ़ने से ही जीव जानता है साईं कौन हैं। जीव जानता है साईं गीता में मैंने पहली बार विस्तार से अपनी पूरी पहचान दिया है। मैं क्या हूँ, कौन हूँ और वो पहचान क्या है? मैं सब कुछ हूँ। मेरे बिना कुछ भी नहीं है। जो कुछ है सो एक मैं हूँ। मेरे बिना कुछ भी नहीं है। साईं गीता का सार है कि मैं ही सब कुछ हूँ। साईं गीता का अर्थ मैं ही सब कुछ हूँ। साईं गीता का सार एक मेरे बिना कुछ भी नहीं है। जो कुछ है सो मैं हूँ। मैं ही राम हूँ, कृष्ण हूँ, शंकर हूँ, दत्तात्रय हूँ, दुर्गा हूँ, काली हूँ, चण्डी हूँ, सब कुछ हूँ, मैं ही जीज़स हूँ, मोहम्मद हूँ, नानक हूँ, गुरु गोविन्द हूँ मेरे बिना कुछ भी नहीं है जो कुछ है सो एक मैं हूँ। सब में मुझे देखो। बस ये ही साईं गीता का सार है। भेद-बुद्धि की जगह कहीं ना रहे। बस इसको अच्छी तरह से समझने का है। साईं गीता तुम्हारे सबके लिए आदरणिय है। साईं गीता तुम्हारे लिए मेरी देन है। सुबह उठ कर पहले साईं गीता को प्रणाम करना फिर कुछ साधना, पूजा-पाठ

करना। ये मेरा आदेश है और साधना भी। साईं गीता से बढ़ कर और कौन सी साधना हो सकती है। साईं गीता को जितना पढ़ोगे उतना अमृत मिलेगा। साईं गीता क्या है एक अनंत जीवन की सगुण गाथा। जो श्रद्धा सहित भाव सहित साईं गीता का पारायण प्रतिदिन करता है वो धीरे-धीरे उस एक अनंत जीवन में विलीन होना शुरु हो जाता है। जो साईं गीता का भाव सहित, श्रद्धा सहित पारायण प्रतिदिन करता है उसमें रहने का जतन करता है वो मुझ आदि-अनादि जीवन में धीरे-धीरे विलीन होते चले जाता है। ये साईं गीता की महिमा है। प्रचार करो सबको बताओ ये पूर्ण माँ का पूर्ण ग्रंथ है। जिस घर में साईं गीता की पूजा होती है उस घर में साईं की पूजा होती है। साईं के हृदय तक पहुँचने का जतन करो। साईं के हृदय तक पहुँचने का एक ही रास्ता है, साईं गीता का पारायण। अमृत सागर से निकली हुई ये साईं गीता जीवों को अमृत पिलायेगी। जो ये अमृत पियेगा वो अमर हो जायेगा। घर-घर में इसका प्रचार करने की जरूरत है। तुममें से जो भी सच्चे मन से, पूरे तन-मन से साईं गीता पढ़ेगा, सुनेगा और उससे भी ज्यादा दूसरों को सुनायेगा वो मेरी बहुत प्रिय आत्मा हो जायेगा। जो साईं गीता का प्रचार करेगा उसके सब पाप-ताप मैं धो दूंगा। इस बात को अच्छी तरह से समझने का है। जिस घर में मेरी मूर्ति नहीं है वो साईं गीता रख कर मेरी पूजा कर सकते हैं। मूर्ति और साईं गीता

में कुछ भेद नहीं है। मूर्ति बोलती नहीं साईं गीता बोलती भी है। साईं गीता की आराधना कैसे करना चाहिए एक चौकी पड़ी है उसमें साईं गीता जी रखी हैं लाल रंग का कपड़ा है गोटा लगा हुआ है। ऊपर गणेश जी का स्वास्तिक है - अगरबत्ती जल रही है और थोड़े से पुष्प पड़े हैं। ऐसे साईं गीता की पूजा आराधना करना चाहिए। शाम का समय है कोई दीया जला रहा है और साईं उसमें से निकल कर कहते हैं कि ऐसे ही तेरे अंदर के बुझे हुए दीये को जला दूंगा। इस अमृत सागर में जितनी भी डुबकियाँ लगाओगे उतना पाप कटेगा। चित्त शुद्ध हो जायेगा। मन निर्मल हो जायेगा जब तुम्हारा अंतकाल आयेगा तो साईं गीता को सुनो, साईं गीता सुनते-सुनते अपना शरीर छोड़ो। पार होने का ये ही रास्ता है। तुम सबको पार होने की मजबूत नौका दे रहा हूँ। कर वो ही सकेगा जो सारी उम्र सारी आयु प्रतिदिन साईं गीता का पारायण करेगा उसी को याद आयेगा। लेकिन जो अंत समय साईं गीता को सुन कर साईं गीता पढ़ कर अपने सीने से लगाता है वो पार हो जायेगा। अब जो साईं गीता मैं दूंगा उसको अपने प्राणों के समान रखना। पहले साईं गीता रखो फिर अपना सामान रखो। साईं गीता को साथ ले जाकर रख रहे हो तो तुम्हारी कोई हानि नहीं कर सकता है। ऐसे पावन पवित्र अमृत वचन बाबा बोल रहे हैं। माँ के परम धाम तक पहुँचने के लिए ये साईं गीता पासपोर्ट का काम करेगी। इस

बात को समझने का है। अमृत सागर दिखा रहे हैं बड़ी आनंद की स्थिति है। गुलाब के फूलों से साईं गीता लिखा हुआ है कभी लगता है ये क्षीरसागर है कभी लगता है सभी साईं गीता के साथ तैर रहे हैं। श्री साईं गीता जो इसका दर्शन भी कर लेता है वो पार हो जाता है। सब रोगों की, तकलीफों की दवा, सब मुसीबतों की दवा, जन्म-मरण के भयानक रोग की दवा है श्री साईं गीता। मैं नहीं चाहता कि तुममें से कोई भी संसारी चीज़ों के लिए साईं गीता का पारायण करें। बाहर के लोग जो भी ऐसा करेंगे उसके दुःख-दर्द दूर होंगे। भक्तजन अपनी साईं गीता को अपनी आत्मा से भी ज्यादा बढ़ कर प्यार करेंगे और दुष्टजनों को भय आयेगा साईं गीता को देख कर। युग आएँगे युग जाएँगे साईं गीता का प्रचार दिन ब दिन बढ़ते ही चले जायेगा। इसकी कीर्ति इतनी महान है एक समय में सारे जगत् में फैल जायेगी। इसकी सुगंधी इतनी निर्मल है कि घर-घर में सुगंध देगी। इसकी इतनी सुन्दरता है कि घर-घर को यह सुन्दर बनाएगी। सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। रुमाल साईं गीता पर रखा हुआ है ऊपर यह लिखा हुआ है सत्यम् शिवम् सुन्दरम् अमृत सागर दिखा रहे हैं और दिखा रहे हैं जो-जो भाव के साथ साईं गीता का पारायण कर रहे हैं वो धीरे-धीरे समय पाकर एक-एक करके अमृत सागर में गिरते जा रहे हैं। जो अमृत सागर में मिल कर गुम हो जाता है वो फिर मुड़ कर जगत् में नहीं आता भूलना नहीं मैं साईं

गीता का ग्रंथ तुम्हें नहीं दूंगा मैं अपने आपको, अपना आप तुमको दूंगा। इस बात को समझने का है। इस समय जगत् में भयानक गिरावट आई हुई है। संत महात्मा जिस जगह बैठे हैं वो कह रहे हैं, प्रार्थना कर रहे हैं – हे ईश्वर! इस जगत् को बचाओ उनकी प्रार्थना सुन कर ही मैंने ये पावन ग्रंथ तुम सबको दिया है।

जै मैय्या

जिसका मैंने उद्धार करना होता है उसके हाथ में मैं अपना संदेश दिलवाता हूँ। जैसे-जैसे ये प्रचार का कार्य बढ़ते जायेगा उतनी-उतनी प्यासी आत्माओं को राह मिलती जाएगी। साईं गीता जो एक बार पढ़ लेता है उसको कहीं जाने की जरूरत नहीं होती है। वो पूर्ण रूप से संतुष्ट हो जाता है। जो साईं गीता को सच्चे मन से पढ़ेगा उस पर चलेगा उसके पार होने में कोई शक नहीं है। साईं गीता मेरा रूप है, साईं गीता मेरी आत्मा है। साईं गीता में मैं आप हूँ। इसमें कुछ भी भेद नहीं है। साईं गीता के एक-एक शब्द में मैं आप समाया हुआ हूँ। जब-जब किसी का अंत समय आए तो आसपास वालों को बोलो कि उसको साईं गीता सुनाओ। हो सके तो साईं गीता का एक ग्रंथ अपने सीने पर रख कर मेरा प्रगट रूप जान कर साईं गीता से चिमट जाओ। इस स्थिति में अपने प्राण छोड़ोगे तो सीधा तुम मुझमें मिल

जाओगे। जो साईं गीता का प्रचार करेगा उसकी सद्‌गति होगी ही। ये निश्चय ही पक्की बात है। फिर से वो ही दृश्य दिखा रहे हैं। नीचे घट में अमृत का सागर ठाठे मार रहा है। उस अमृत सागर में साईं गीता तैर रही है खुली हुई है और कितने देवी देवता उस पर फूल चढ़ा रहे हैं। बड़ा सुन्दर दृश्य है। ऊपर से सभी देवी देवता आ रहे हैं नमस्कार करते जा रहे हैं ये भवतारक ग्रंथ है। भव से तारने वाला है। ये भवतारनी माँ है। जो लोग सेवा को जाएँ ये ही शब्द बताएँ ये भवतारनी माँ है। जो साईं गीता की सेवा करने जाते हैं। उन्होंने ये ही बताना चाहिए। ''ये भवतारनी माँ है।'' जिसने साईं गीता को अपना लिया जिसने इस भवतारनी माँ को अपना लिया उसके उद्धार की दूसरी जगह कहाँ है। साईं गीता अमृत पिलाने वाली है। साईं गीता हमें अपनी गोद में मिलाने वाली है। साईं गीता हमें निर्मल बनाने वाली है। साईं गीता की महिमा हम भी नहीं बता सकते। साईं गीता की महिमा अपरम्पार है। साईं गीता की महिमा हम भी नहीं बता सकते। बाबा दिखा रहे हैं साईं गीता के इस ग्रंथ को उठा कर स्वर्गलोक ले गए और बोले साईं गीता को पढ़ कर सुनाओ ये तो बाबा साईं नाथ की अपनी बनाई हुई है। बाबा ने कितना अमृत बहाया है। स्वर्ग लोक में भी भगदड़ मच गई है। शोर मच गया बाबा की साईं गीता आई है हर कोई पढ़ने का इच्छुक है। किसी ने साईं गीता ब्रह्मा जी को दिया ब्रह्मा

जी नमस्कार कर रहे हैं ये त्रिलोक पावनी माँ है। ब्रह्मा जी सरस्वती जी की ओर देख रहे हैं आपको माध्यम बना कर बाबा ने ये ग्रंथ लिखा और सरस्वती जी सिर हिला रही हैं। महाराज बोल रहे हैं। साईं गीता का ग्रंथ शुरु करने से पहले गणेश जी फिर सरस्वती जी को नमस्कार करना चाहिये। इस ग्रंथ में इन दोनों ने हमारी बहुत सहायता की है। साईं गीता का एक-एक श्लोक भव से पार लगाने वाला है। एक-एक श्लोक को भी जो मनन करेगा उसका उद्धार हो जायेगा। साईं गीता का पारायण सबसे उत्तम है। दिन-रात साईं गीता का पारायण किया करो। जिसके पास साईं गीता है उसको और कुछ पढ़ने की जरूरत नहीं है। साईं गीता पढ़ते जाओ, मनन करते जाओ। यहीं तो जीव का कल्याण है। परमेश्वर के भजन में बाधा डालता है अहंकार। कर्म की गति ढीली करने के लिए साईं गीता जैसी कोई भी साधना नहीं है। जब कर्म ज्यादा जोर मारने लगें तो साईं गीता का पारायण करो।

साईं गीता मेरा रूप है, मेरी आत्मा है, मेरा हृदय है। साईं गीता जगत् को मेरी देन है। जहाँ-जहाँ साईं गीता पहुँच जायेगी वहाँ-वहाँ प्रकाश फैलते जायेगा। जगत् के इतिहास में मैं बहुत बड़ा कार्य कर रहा हूँ। साईं गीता जिसमें अध्यात्म के हर एक प्रश्न का उत्तर है। साईं गीता सच्चे जिज्ञासुओं के लिए घट में से प्रकाश देगी। साईं गीता महान है। साईं गीता ग्रंथ नहीं है, साईं गीता माँ है। माँ समझ कर साईं गीता

पढ़ो। गुरु और शिष्य का संबंध वाणी का होता है। जो वाणी को तोड़ता है उसका गुरु और शिष्य का संबंध टूट जाता है। जगत् के कल्याण के लिए मैंने ये अमृत बहाया है। साईं गीता की जिसको एक बार पहिचान हो गई फिर वो और कुछ पढ़ नहीं सकेगा। साईं गीता अपार सागर है। अपने आप को मिटा कर सेवा करो। सेवा का पूरा फल उसी को मिलेगा जो अपना आप मिटा कर सेवा करेगा। जहाँ साईं गीता पहुँच गई है तो इस बात की guarantee है कि वो नरक नहीं जायेगा जहाँ भी साईं गीता चली जायेगी वहाँ अंधेरे में प्रकाश हो जायेगा। जहाँ भी साईं गीता का पारायण होगा वहाँ भय आने की जगह नहीं रहेगी। करोड़ों, अरबों, खरबों जीव नरक में सड़ रहे हैं। तुम उनको बचा सकते हो। साईं गीता का प्रचार मतलब सत् का प्रचार करना है।

★ ★ ★

श्री साईं गीता के दोहे

पावन इस ग्रंथ से सब का हो कल्याण।
कलयुग में ये चमक रही कोटि सूर्यों समान।।
साईं गीता नौका है भव सागर से तरने को।
ब्रह्म कुण्ड से आईं है ये कलयुग की मल हरने को।।

पढ़ो पढ़ाओ साईं गीता

दूसरों को सुखी बनाने का ढंग यहाँ पर अच्छा दिया है। सत्‌सेवा। एक भी कोई साईं गीता लेकर पढ़ता है तो उसके अंदर से मैला निकलता है। जो शुद्ध मन से साईं गीता का पारायण करता है वो ना तो पाप कमाई करेगा ना तो घर में लाएगा। साईं गीता पढ़ों और दूसरों से भी साईं गीता का पारायण कराओ। अंतरंग के जगत्‌ में एक जगह पर साईं गीता खुली हुई पड़ी है और बाबा साईं नाथ विस्तार से बता रहे हैं – अमृत सागर है। अमृत सागर के ऊपर साईं गीता खुली हुई तैर रही है। साईं गीता की धुनियाँ बोलने की आवाज आ रही है और साथ-साथ साज भी बज रहे हैं। साथ-साथ देवी देवता फूलों की वर्षा कर रहे हैं। सब फूल और साईं गीता तैर रही हैं। यह कलयुग की भवतारक वाणी है। जो भी इसको भाव से पढ़ेगा उसके पाप कर्म अपने आप छुट जाएंगे। वो पाप कर्म कर ही नहीं सकेगा। बजाए कुसंगत करने के साईं गीता की संगत क्यों नहीं करते, जब खाली हुए तब साईं गीता पढ़ो। यह एक सच्ची सत्‌संगत है, जो पार लगा कर छोड़ेगी। सभी अमंगल हर लेगी। तुम्हारे जीवन में मंगल ही मंगल हो जाएगा। अच्छा बुरा सब छोड़कर साईं के बनो। ये ही साईं गीता सिखाती है। साईं के बन जाओगे तो सभी पाप साईं गीता धो देगी। क्या बताऊँ एक मेरे

सिवाय दुनियाँ में मुश्किल के समय कोई भी काम नहीं आता और मायावी लोग मुझे ही सबसे पहले छोड़ देते हैं। जिसका मैं हूँ उसको काहे का डर। जा घर जाकर लाखों-करोड़ों बांट दे एक मेरा आसरा रख। जब तक तुझे लाखों-करोड़ों का आसरा है मैं तेरे निकट कभी नहीं आऊंगा। जब लाखों-करोड़ों को निकालकर एक तरफ कर देगा तभी मैं तुम्हारा सच्चा साथी बनूंगा। भरमों में मत पड़ो जो कुछ है साईं गीता रूपी माँ है। उस सच्ची माँ को भूलो नहीं। सुख में दुःख में यह माँ तुम्हारे काम आएगी। जिस माँ को तुम छोड़ रहे हो, वो माँ तुम्हारे दुःख तकलीफ में काम आएगी। साईं गीता का आसरा छोड़ो नहीं। जितना साईं गीता से चिमटते जाओगे उतना कर्म कम होते जाएगा। अहंकार में रहोगे, नहीं सुनोगे तो यहाँ भी रोते रहोगे मरकर भी रोते रहोगे कोई बचाने वाला आयेगा नहीं।

★ ★ ★

श्री साईं गीता के दोहे

तू हँसा दुनियाँ में आनन्द छा गया।
फरिश्ते भी पूछते हैं बताओ हमें ये क्या हुआ।।
आगमन हुआ जग में साईं गीता का।
सदियों का अन्धकार दूर हुआ।।

भविष्य वाणी

आसरा रखना केवल उसका जो आदि काल से निरआसरों का आसरा हो, वो एक ही स्थान है सकल ब्रह्मण्ड में ईश्वर बाबा साईंनाथ का। जो केवल मेरे आसरे जीते हैं उनको आसरा मिलता ही है, मैं निराधार का आधार हूँ, जिसको मेरे सिवाय और कोई आधार नहीं है उसका मैं आधार हूँ। पूर्ण रूप से मेरे को अपनाओ, पूर्ण रूप से मेरे बन कर देखो क्या होता है, तुम्हारे जीवन में से कांटे निकल जाएंगे। जिसको एक मेरा आधार है फिर उसको काहे की चिंता। जहाँ हम हैं वहाँ क्या कम है। कर्म आते हैं, आने दो। जिसका हम सहारा हैं, उसको फिर काहे का डर। मैं जगत् में बहुत बड़ा खेल कर रहा हूँ, लाखों जीव मेरे आसरे जी रहे हैं, लाखों के दुःख-दर्द मैं दूर कर रहा हूँ। ये जगह सर्व जगत् को आधार देने वाली है।

आने वाले समय में पूर्ण जगत् इस जगह पर सहारे के लिए चल कर आएगा। ये भविष्य वाणी है – पूर्ण होकर रहेगी। मैंने संकल्प किया है मैं इस बालक के द्वारा जगत् का कल्याण करूँगा, मेरा संकल्प पूरा होकर ही रहेगा। लाखों क्या करोड़ों आत्माएँ अमृत पिएंगी। जो अमृत मैं यहाँ से बहा रहा हूँ साईं गीता, अमृत सागर और दूसरे ग्रंथ सब मेरी देन हैं। साईं गीता माँ है जो साईं गीता का हर रोज बिना नागा

पारायण करता है उसके ऊपर साईं का हाथ बना ही रहता है। साईं गीता का नित्य पारायण करने वाले का हर कर्म थोड़े-थोड़े में पूरा होता है। हर एक को दृढ़ता से बताओ साईं गीता पढ़ोगे तो बाबा तुम्हारे कर्म थोड़े-थोड़े में पूरे करेंगे। तुम्हारा उद्धार हो जाएगा। तुम जन्म-मरण के चक्कर से छुट जाओगे। साईं गीता क्या सिखाती है कर्म भोग से डरो मत। एक काम करो साईं को अपना लो कर्म भोग का बाप भी तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं कर सकेगा। कर्म भोग देने वाला कौन है – मैं हूँ। मैं ही इस जगत् में कर्म फल दाता हूँ तुम सच्चे मन से मुझे अपना लोगे मैं तुम्हारा दुःख कैसे देख सकूंगा। मैं तुम्हारी वो गति बनाना चाहता हूँ कि तुम कर्म भोग पर हंसो। आ जा तू, मैं साईं का प्रिय बच्चा हूँ आ जा। कर्म भोग आ रहे हैं तो सोचो हमारा उद्धार करने के लिए हमारी माँ हमें कर्म दे रही है। वो जानते हैं, हर कर्म भोग की डोज़ (dose) के बाद हम और पवित्र होकर निकलते हैं, कर्म भोग से प्यार करो। तभी तुम कह सकते हो, माँ हमें तुमसे सच्चा प्यार है। जब तुम अपनी माँ को पाने की फीस खुशी से भरोगे तो मेरी खुशी आएगी ही। और ये फीस क्या है कर्म भोग, अपने कर्म खुशी से भोगना। मेरा जन किसी भी स्थिति से डरे क्यों, जब मैं तुम्हारे साथ हूँ। जो मृत्यु किसी से नहीं रुकती उसको मैं कान पकड़ कर चलाता हूँ। मैं अकाल पुरुष हूँ काल से परे। हे अर्जुन! मेरे जगत् में आने

में और दूसरे जीवों के आने में बड़ा फर्क है। दूसरे जीव काल के वश में होकर जन्म लेते हैं मैं जगत् में आता हूँ माया को साथ अपने वश करके आता हूँ। निडर होकर जीवन व्यतीत करो। मेरे बन कर रहो और निडर होकर जीवन व्यतीत करो। फिर किसी भी स्थिति से डरो मत। दृढ़ करो इस सच्चाई को। दुनियाँ में सबसे बड़ी miracle क्या है, आज दुनियाँ से बाहर निकल कर देखो साईं गीता की कितनी miracle हो रही हैं। सैकड़ों घरों में रोज साईं गीता miracle कर रही है। और जिस स्थान से ये माँ उपजी हैं उस स्थान की महिमा क्या होगी, जो माँ ज्ञान भक्ति का आखरी भंडार है वो एक नन्हे बच्चे के अंदर से आई हैं। इसको मनन करो। इसको समझने की कोशिश करो। बड़े से बड़े साधु-संत भी आज साईं गीता को ज्ञान भक्ति का अंतिम भण्डार मानते हैं और वो ही साईं गीता एक नन्हे बच्चे के अंदर से प्रगट हुई है। आज Lord Jesus का जन्म-दिन है वो मेरा रूप हैं फर्क नहीं है। मैं आप लोगों को बोलना चाहता हूँ, उनको आज भक्तिभाव से याद करो। Lord Jesus ने इस बच्चे को हाथ में लिया हुआ है, जहाँ ये बच्चा है वहाँ मैं हूँ, आप क्या बताओगे, क्या मेरी पूजा करोगे मैं तो साक्षात यहाँ हूँ, आप क्या बुलाओगे, क्या मेरी पूजा करोगे मैं तो साक्षात यहाँ मौजूद रहता हूँ। इस बच्चे में आपके सिवा और मेरे सिवा है ही क्या। जहाँ ये बच्चा है वहाँ मैं हूँ। मैं सोयम् साक्षात बैठा हूँ। मैं और साईं एक

है। मैंने पश्चिम में आवाज दिया था दो हजार साल पहले The kingdom of heaven is within you. Knock and the door shall be opened. But thou can enter the kingdom of heaven only as a child.

अध्यातूम का सूरज निकल आया है साईं गीता के रूप में, साईं गीता की रक्षा अद्भुत रक्षा है। साईं गीता सबका अंतिम ज्ञान है। साईं गीता का प्रकाश दिन-ब-दिन बढ़ने वाला है। साईं गीता के साथ-साथ मेरी रक्षा के हाथ घर-घर में पहुँचते जा रहे हैं। आज से ७३ वर्ष पहले एक गांव में एक बच्चे का जन्म हो रहा था लालटेन भड़क उठी थी। प्रकाश हुआ बच्चे का जगत् में। अध्यातम् का सूरज निकला। साईं गीता की कहानियाँ घर-घर में जाएंगी। आज भी हजारों घरों में हर रोज साईं गीता की रक्षा की चर्चा हो रही है। अध्यातम् का सूरज निकला देख लगता है मेरे बच्चे का जन्म नहीं हुआ भक्ति और ज्ञान का जन्म हुआ। निष्काम भक्ति का प्रकाश जगत् में फैलने लगा है।

जै मैय्या

SAI PUBLICATIONS
www.shrianandsai.org

श्री साईं गीता की महिमा

पावन साईं गीता को रूप साईं का जान।
पूरन इस ग्रंथ में समा रहे भगवान।।
पावन साईं गीता है अमृत सिन्धु महान।
पढ़े सुने जो प्रेम से अमृत कीजै पान।।

साईं गीता जानियो प्रगट गुरु का रूप।
इस में हर जी आप समाए पूरण पुरुष अनूप।।
साईं गीता मानियो पूरे गुर की पूरण बाणी।
रहे जो साईं गीता में पार होए सो प्राणी।।

साईं गीता सेवियो साईं चरण धर ध्यान।
पावन इस प्रकाश से सब का हो कल्याण।।

हे जीवो वडभागियों साची कार कमाओ।
साईं गीता का संदेश घर-घर में फैलाओ।।

साईं गीता जो पढ़ै शुद्ध कमाई खाए।
मेरी परम दया से सो जन मुझ में ही मिल जाए।।

सदा-सदा ही सिमरिये गणपति दीन दयाला।
भक्तों का कल्याण करें दुर्गा माँ के लाला।।

साईं गीता के श्लोक सब जग पावन कीजै।
साईं गीता मनन कर प्राणी अमृत पीजै।।

साईं गीता जानियो शब्द ब्रह्म का रूप।
इसमें साईं आप है पूरन ब्रह्म स्वरूप।।
शब्द ब्रह्म को नमस्कार नमस्कार है बारम्बार।।

साईं गीता सेवियो साईं चरण धर ध्यान।
पावन इस प्रकाश से सब का हो कल्याण।।

हे जीवो वडभागियो साची कार कमाओ।
साईं का संदेश घर-घर में फैलाओ।।

साईं गीता जो पढ़ै शुद्ध कमाई खाए।
मेरी परम दया से सो जन मुझ में ही मिल जाए।।

" ॐ श्री साईं "

श्री साईं गीता की आरती

जै साईं गीता जै साईं गीता।
जै साईं गीता जै साईं गीता।।
जो ध्याता सो अमृत पीता।
जै साईं गीता जै साईं गीता।।
कोटि सूर्यों सम तेज तुम्हारा।
ज्ञान भक्ति का पुंज अपारा।।
जै साईं गीता जै साईं गीता।
जै साईं गीता जै साईं गीता।।
मन का दूर करे अंधियारा।
साईं का तू ठाकुर द्वारा।।
जै साईं गीता जै साईं गीता।
जै साईं गीता जै साईं गीता।।
साईं गीता मात हमारी।
साईं गीता पे हम वारी।।
जै साईं गीता जै साईं गीता।
जै साईं गीता जै साईं गीता।।

ॐ श्री साईं

SAI PUBLICATIONS
www.shrianandsai.org

श्री साईं गीता का सार

जो तू सोचैं जो तू समझैं
करता जो दिन रात में।
कारण सब का जान मुझे
सब तार हैं मेरे हाथ में।।
सुन रे मानव सुन रे मानव
तुझ से क्या छिपाऊँ मैं।
सर्व भूतों में रमा हुआ
ये सृष्टि सब चलाऊँ मैं।।

" ॐ श्री साईं "

हमारे अन्य हिन्दी प्रकाशन

	प्रकाशन	मूल्य
1.	श्री साईं गीता *(एक सगुण जीवन की निर्गुण गाथा)*	200.00
2.	श्री अमृत सागर *(सरल शब्दों में मातृ उपासना)*	50.00
3.	साईं माँ	35.00
4.	जय गुरु शक्ति	25.00
5.	श्री गुरु लीला अमृत *(स्वामी सीतारामदासजी महाराज की जीवनी)*	10.00
6.	अमर ज्योति *(1000 अनमोल वचनों का संग्रह)*	18.00
7.	श्री गायत्री रस अमृत	3.50
8.	वचनमाला	7.00
9.	मन्त्रमाला *(बाबा साईंनाथ के 108 मंत्र)*	7.00
10.	श्री शिव महिमा	6.00
11.	श्री हनुमान महिमा	5.00
12.	श्री साईं महिमा	10.00
13.	श्री कृष्ण महिमा	5.00
14.	श्री राम महिमा	7.00
15.	श्री दत्तात्रेय महिमा	5.00
16.	श्री नारायण महिमा	7.00
17.	श्री नरसिंह महिमा	3.00
18.	श्री भगवती सीता महिमा	3.00
19.	राम नाम की अनन्त महिमा	4.00
20.	श्री दुर्गा पूजा	4.50
21.	श्री महाकाली अमृतम्	7.00
22.	श्री विष्णु सहस्त्र नाम *(भावार्थ सरल हिन्दी भाषा में)*	7.00
23.	मैनावती कहे गोपीचन्दा	2.00

प्रकाशन	मूल्य
24. श्री रक्षा मन्त्र	4.00
25. गुरु माते हर हर हर	4.00
26. जय नौ नाथ	3.00
27. प्यार की तरंगें	4.50
28. आनन्द का पथ	4.00
29. रोग दूर करने के अध्यात्मिक उपाय	7.00
30. नौ प्रकार की भक्ति	10.00
31. जीने का आर्ट	10.00
32. जो चाहे अपनो भलो पढ़े सुने ये वानी	3.00
33. साईं जन्म की मंगल गाथा	3.00
34. सब का राखा तू	10.00
35. अमृत वाणी *(श्री राधाजी की महिमा)*	7.00
36. श्री गंगा मैय्या	10.00
37. भविष्य की झलक	8.00
38. श्री गुरु चालीसा	4.00
39. श्री साईं चालीसा	5.00
40. श्री सुख सरोवर	3.00
41. श्री साईं सुख चालीसा	5.00
42. श्री राम चालीसा	3.00
43. श्री कृष्णा चालीसा	3.00
44. श्री शिव चालीसा	2.00
45. श्री गणेश चालीसा	3.00
46. श्री भगवती चालीसा	3.00
47. श्री महालक्ष्मी चालीसा	4.00
48. भवतारक स्तोत्रम्	3.00

SAI PUBLICATIONS
www.shrianandsai.org

प्रकाशन		मूल्य
49.	शक्ति माँ के द्वार पर	3.00
50.	ॐ साईं भगवती *(रक्षा कवच)*	5.00
51.	श्री दुर्गा चरित्र	4.00
52.	श्री सत्यनारायण चालीसा	2.00
53.	आरतियाँ	4.00
54.	अमृत आरती *(श्री साईंबाबा जी की)*	1.00
55.	कृपा का रास्ता	1.00
56.	गुटका	1.00
57.	पापहरण स्तोत्र	1.00
58.	अपने आप को त्यागना है	4.00
59.	लिखित जप पुस्तिका *(लिखित जप करने के लिए)*	5.00
60.	ग्रह शान्त करने के दस अचूक उपाय *(पोस्ट कार्ड)*	0.40
61.	अमृत सन्देश	10.00
62.	श्री शिव तत्व	2.00
63.	श्री कृष्ण तत्व	3.00
64.	श्री महाकाली तत्व	3.00
65.	श्री नारायण तत्व	3.00
66.	श्री साईं अमृत तत्व	4.00
67.	निष्काम भक्ति	3.00
68.	खेल करन मैं आया जग में	2.00
69.	तू ने ही दर्द दिया तू ही दवा देना	5.00
70.	गृहस्थियों के लिए सन्त मार्ग	4.00
71.	साईं मौज में रहना रे बन्दे	2.50
72.	दुःख दूर करने के लिये शब्द की शक्ति	4.00
73.	अमृत की धाराएँ	4.00

प्रकाशन		मूल्य
74.	शिव शक्ति उपासना	5.00
75.	श्री साईं पाठ	5.00
76.	जै जै शक्ति जै जै शंकर जै जै सीता जै जै रघुवर	2.00
77.	श्री शिव शक्ति दर्शन	2.00
78.	गुरु की सच्ची महिमा	2.00
79.	अंतरंग ज्ञान	2.00
80.	नर्क छेदक *(श्री साईंबाबाजी की स्तुति)*	5.00
81.	सबके भीतर मेरो साईं	5.00
82.	भगवान साईंनाथ के प्रिय अमृत पुत्र के प्रदान किए हुए पावन अमृत अनुभव *(14 भागों में)* (प्रति भाग)	2.00
83.	अंतरंग के अनुभव	30.00
84.	दुःख नाशक	0.25
85.	श्री नौ नाथ चालीसा	2.00
86.	आनंद प्रकाश *(नितनेम के लिए पावन प्रार्थनाएँ)*	7.00
87.	श्री भगवती नामावली *(भगवती माँ के 108 मंत्र)*	5.00
88.	सत् की वाणी – सत् की जुबाणी (भाग 1)	10.00
89.	सत् की वाणी – सत् की जुबाणी (भाग 2)	10.00

व अन्य कई प्रकाशन

श्री बाबा साईंनाथ के भजनों के कॅसेट्स सी.डी. (ऑडियो), स्टीकर्स, वॉल हैंगिंग वार्षिक कैलेण्डर भी उपलब्ध है।

इसके अलावा मराठी, अंग्रेजी तथा तेलगु भाषा में भी पुस्तकें उपलब्ध हैं।

Our Publications are also available at following addresses

- **MRS. BINDU GUPTA**
  12/9, BOAT CLUB ROAD,
  PUNE-410 001. PH. NO. 26123095
- **MRS. KIRAN BAWA**
  1770, PRATAP STREET,
  CHUNA MANDI, PAHARGANJ,
  NEW DELHI-110 058
  PH. NO. 23588409
- **MRS. MAHIMA BATRA**
  4/10, SARWAPRIYA VIHAR
  NEW DELHI-110 017.
  PH. NO. 26856644
- **MRS. RITU UBEROI**
  25, BHAGWAN DAS ROAD,
  OPP. ST. XEVIOR'S SCHOOL,
  JAIPUR-302 001. (RAJASTHAN)
  PH. NO. 2377050
- **MRS. ANJANA SHARMA**
  B-73B, RAMA PARK
  NAJAFGARH ROAD
  NEW DELHI-110 059
  PH. NO. 25351490
- **MR. VIKRAM SETH**
  601, SHAILJA APARTMENTS,
  PALI HILLS, BANDRA,
  MUMBAI-400 050
  PH. NO. 26484114

Contd. .. 2.

- **MR. PARAMANAND VIJ**
  C/O. WINS FOOT FASHION
  A-20-21, 1ST FLOOR,
  NEELAM SHOE CENTRE
  HING KI MANDI,AGRA-282 003.(U.P.)
  PH. NO. 5533425
- **MRS. NEELAM BHATIA**
  HOUSE NO. 103-104, POCKET A-3,
  SECTOR 16, ROHINI, NEW DELHI-85
  PH. NO. 27884671
- **SAI LEELA STORES**
  NEAR SAMADHI MANDIR
  SHIRDI
  PH.NO. 255153
- **MR. MUNISH BATRA**
  43337, JULLIE MARTIN CT.
  ASHBURN, VA 20147 U.S.A.
  PH. NO. 703-723-6474
- **M/S. GANESH STATIONERY MART**
  2-2-25, M. G. ROAD
  JALNA. (M.S.)
  PH. NO. 232601
- **M/S. SAI ARPAN**
  SRI SHIRDI SAI BABA MANDIR
  189, RAJPUR ROAD,
  DEHRADUN-248 001. (UTTARANCHAL)
  PH. NO. 2735543, 2735380
- **DR. R. K. SEHGAL**
  MISSION COMPOUND
  NEAR ST. MARRY'S SCHOOL
  SAHARANPUR. (U.P.)

Contd. .. 3.

- **MR. NARENDRA KUMAR PASIN**
  481/6, URBAN ESTATE
  KARNAL-132 001. (HARYANA)
  PH. NO. 01842-286235
- **MR. RAMESH MODIYANI**
  SRI SAI BABA MANDIR
  SECTOR 8/131, MALVIYA NAGAR
  JAIPUR (RAJ.)
  PH. NO. 2546140
- **MRS. KAMAL G. SACHDEV**
  A-4, RADHA KRISHNA NAGAR
  DR. AMBEDKAR ROAD,
  MULUND (W), MUMBAI-400 080
- **MRS. RAMA KUNDRA**
  E-166, SECTOR-41,
  NOIDA-201 303.
  PH. NO. 2500040
- **M/S. DWARKAMAI STORES**
  NEAR DWARKAMAI
  SHIRDI